Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती: एक कलाकार के रूप में

DR. KULDEEP KAUR
Assistant Professor, Sri Guru Ramdas Group of Institute, Pandher, Fatehgarh Churian

PROF. GURPREET KAUR
Former Head and Dean, Department of Music, Guru Nanak Dev University, Amritsar

सारांश: *सितार की उन्नतशीलता में प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती का नाम उत्कृष्ट महिला सितार वादकों की श्रेणी में शमिल है। जयपुर सेनिया घराने की सितार के 17 पर्दे वाली परम्परा को शिरोधार्य कर उसका गौरव, उन्नत व उज्ज्वल करने में डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती का नाम अग्रणी है। उन्होंने विश्वभर के देशों में सितार वादन प्रस्तुत कर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का ख़ूब प्रचार किया। वे आज भी इसी घराने की सितार वादन की रीति का पूर्णरूपेण अनुसरण कर रहीं हैं।*

बीज शब्द: *डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती, जयपुर सेनिया घराना, कला, सितार वादिका।*

प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती की कला यात्रा का प्रारंभ

बाल्यकाल से ही डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती की संगीत में विशेष अभिरूचि देखी गई थी। परिवार में सभी को संगीत के प्रति रुचि तो अवश्य थी, किंतु किसी ने इसे अपनी आजीविका (करियर) नहीं बनाया। घर में आपकी बुआ बहुत मधुर गाती थी और निरंतर अभ्यास भी करती थी। 'बचपन से ही मैं गाना, बजाना और डांस बहुत करती थी। मेरी बचपन से ही आंतरिक इच्छा थी कि मैं संगीत के क्षेत्र में कुछ अलग करूं। मगर मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि संगीत मेरा प्रोफेशन बनेगा। बुआ गाती थी तो मैं बैठकर सुनती रहती थी। फिर मैं उनको फॉलो करने का प्रयास करती थी। बुआ भी मुझे दिल से सिखाती थी। अचानक गले में टॉन्सिल की परेशानी हुई और मेरा गला तार सप्तक पर जाकर फटने लगा जिससे मुझे तकलीफ होती थी। मां ने मुझे सितार सीखने की प्रेरणा दी।'[1]

आपने सर्वप्रथम 'श्री रघुनाथ ओझा जी' (वाराणसी) से सितार सीखना प्रारंभ किया। आपने 9 वर्ष की आयु में वादन संगीत की शिक्षा प्रारंभ की तथा 14 वर्ष की आयु में सितार वादन की प्रथम मंचीय प्रस्तुति दी जिसे लोगों ने ख़ूब सराहा। आपने बनारस के प्रतिष्ठित गुनीजनों से आपने सितार वादन की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। जब भी बनारस में बड़े-बड़े संगीतज्ञ आते तो, आप उनका कार्यक्रम सुनने जाती थी जिससे आपकी कला में और निखार आया। तत्पश्चात् कु. इंदुमती पुरोहित, डॉ. लालमणि मिश्र, डॉ. रामदास चक्रवर्ती तथा जब आप कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में शिक्षण दे रही थी तो आपको सेनिया घराने के शीर्ष स्तंभ कलाकार उस्ताद मुश्ताक अली खां साहिब के शिष्य पद्मभूषण पंडित देवव्रत चैधुरी जी से संगीत की सूक्ष्म बारिकियों को समझने और सीखने का विशेष सुअवसर प्राप्त हुआ। जिससे आपकी आंतरिक आकांक्षा की पूर्ति हो सकी। फलस्वरूप इन्द्राणी जी सितार के सेनिया घराने की नौवीं कड़ी बनी। इस शिक्षा से आप की क्रियापक्ष की मननशीलता को विशेष प्रभुत्व प्राप्त हुआ और उपलब्धियों की श्रृंखला में वृद्धि होती गई। कुरूक्षेत्र में शनिवार को कक्षा लेने के बाद वे तुरंत बस लेकर दिल्ली पहुंचती और रविवार के सुबह अपने गुरू देबू जी के घर जाकर पूरा दिन वहां रियाज़ करती, रागदारी सीखती और फिर दूसरे दिन सीधे वापिस संगीत विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय पहुंचती। यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा। ग्रीष्म और शरद ऋतु के अवकाश में वे आधा समय दिल्ली में और आधा समय बनारस अपने घर में व्यतीत करती थी। इसी बीच सन् 1981 में आप कुरूक्षेत्र छोड़ कर हिमाचल प्रदेश शिमला के संगीत विभाग में असिस्टैंट प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत हुई। वर्ष सन् 1981 से बी हाई ग्रेड तथा वर्ष सन् 1983 में 'ए ग्रेड' कलाकार के रूप में आल इंडिया रेडियो दिल्ली व शिमला से सितार वादन के नियुक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगी। एक प्रतिष्ठित सितार वादिका के रूप में आपने भारत के विविध स्थानों में आयोजित उच्च स्तरीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रमों में सितार वादन की प्रस्तुतियां दी यथाः है, मद्रास (चेनई), बेहट, (ग्वालियर), बैंगलोर, जबलपुर, थाटीपुर मुरार (ग्वालियर), नई दिल्ली, कटक (ओडिशा), भुवनेशवर, रायपुर, काशी (वाराणसी), मुंबई, जालंधर, कोलकाता, शांतिनिकेतन, अकोला, जयपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, रायगढ़, (छत्तीसगढ़), शिमला, चंडीगढ़, मणिपुर, इम्फल इत्यादि।

इसके अतिरिक्त आपने विदेशों में भी सितार वादन की अनेकों प्रस्तुतियां दी, जिनमें नेपाल, जापान, फिलिपिंस, थाईलैंड, कोरिया, हांगकांग, इटली, इंग्लैंड, जर्मनी, हालैंड, डेनमार्क इत्यादि नाम उल्लेखनीय है। प्रथम विदेशी अनुभव यद्यापि थोड़ा कठिन था परंतु उन्होंने

उसे अपने आत्म विश्वास के माध्यम से सर किया। डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती ने लगभग 50 के करीब प्रमुख क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचीय कार्यक्रमों में अपनी सितार वादन की प्रस्तुतियां दी है।

डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती द्वारा प्रस्तुत दूरदर्शन व आकाशवाणी कार्यक्रम

आकाशवाणी एक ऐसा मंच है, जहाँ श्रोताओं से प्रत्यक्ष रूबरू कम देखने को मिलता है। परन्तु कलाकार अपने अनुभव व दूरदर्शिता के माध्यम से सर्वजन हिताय अपनी कला का प्रदर्शन करता है और एक ही समय में समस्त जन समूह को प्रभावित व प्रेरित करता है। प्रो० इन्द्राणी ने भी एक उत्तम व अनुभवी मंचीय कलाकार होने के नाते दूरदर्शन व आकाशवाणी को अपनी कला प्रस्तुतियों का सशक्त मंच व माध्यम बनाया। वर्ष सन् 1981 में आप आकाशवाणी की 'बी हाई ग्रेड' की कलाकार बनी तथा बहुत कम अवधि में वर्ष सन् 1983 में आपने आकाशवाणी की 'ए ग्रेड' कलाकार की उपाधि प्राप्त की। आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की नियमित सितार वादिका रहीं है। आपने दिल्ली, शिमला, बैंगलोर, रायपुर, भोपाल आदि अकाशवाणी के विशेष स्टेशनों से अपनी कला को जन-जनत क पहुंचाया और सेनिया घराना परंपरा का संवर्द्धन भी किया। आपने देश और विदेशों में भी दूरदर्शन व आकाशवाणी पर 70 से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।

डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती की वादन शैली की विशिष्टताएं

* गायन विधा का विधिवत ज्ञान

डॉ. इन्द्राणी एक प्रतिष्ठित सितार वादिका के रूप में अपनी पहचान रखती है। परंतु सितार से पूर्व एक सुलझी हुई गायिका थी किन्तु परिस्थिति वश वे गायन छोड़कर वादन के क्षेत्र में आ गई और स्वयं को एक कुशल सितार वादिका के रूप में स्थापित करने में कामयाब हुई। उन्हें गायन की सूक्ष्म समझ और ज्ञान है। बाल्यकाल से ही गायन विधा का ज्ञान उन्हें अपने परिवार में बुआ से प्राप्त हुआ। "मेरी बुआ द्वारा गायी कुछ बंदिशें मुझे अभी भी याद है।"[2] "मैडम हमें अक्सर कक्षा में गायन की बंदिशें और भजन सुनाया करती थी। "दर्शन दो घनश्याम मोरी अखियां प्यासी रे" उनका पसंदीदा भजन हमें आज भी याद है। उन्हीं से हमें प्रेरणा मिली थी कि वादन के साथ-साथ गायन भी आवश्यक है।"[3]

* रागों की शुद्धता का परिपालन

रागों की शुद्धता कलाकार से कठोर अनुशासन की मांग करती है। डॉ. इन्द्राणी रागों को उनकी पारंपरिक विधि से प्रदर्शित करती है। वे श्रोताओं की रूचि का सम्मान तो रखती ही है, साथ ही रागों की शुद्धता के संदर्भ में कभी समझौता नहीं करती। रागदारी के साथ डॉ. चक्रवर्ती ने कभी संधि नहीं की। उनका सितार वादन शुद्ध रागदारी से परिपूर्ण है।

* जयपुर सेनिया घराना की 17 पर्दों की सितार के विशुद्ध परंपरा का निर्वाह

सेनिया घराना संगीत के इतिहास में सितार वादन का पहला घराना है, जिसके प्रवर्तक मियां तानसेन जी के वंशज थे। सामान्यतः 19, 20 या फिर 21 पर्दों की सितार बजाई जाती है, परंतु सेनिया घराने में 17 पर्दे की सितार का प्रचलन है और इस घराने के वादक भी इस परंपरा को शुद्धता से निभाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। डॉ. इन्द्राणी जी सेनिया घराने की मर्यादा और गौरव का सम्मान करती है।

सेनिया घराने की सितार चूंकि 17 पर्दों की होती है, जिसमें कोमल गांधार तथा कोमल निषाद के पर्दे नहीं होते। डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती इस परंपरा का पूर्णरूपेण सम्मान करती हैं और उन्होंने इस परंपरा का प्रतिपालन किया है। जिन रागों में इन स्वरों के दो रूपों के प्रयोग होते हैं, उन्हें वे बड़ी सहजता से मींड का प्रयोग करते हुए बजाती हैं। ''17 पर्दों वाली सितार पर वादन वास्तव में जटिल कार्य है; क्योंकि इसमें मींड द्वारा ही अधिकाधिक स्वरों का वादन करना होता है। उस्ताद मुश्ताक अली खान साहब की शिष्य-परंपरा में यह विशेषता है कि वे इसी परंपरा को बढ़ाएं। डॉ. इन्द्राणी गांधार-निषाद दो रूप लगने वाले रागों का वादन इतनी ख़ूबी से करती है कि श्रोतागणों के मुख से स्वतः ही 'वाह-वाह' निकल जाती है।''[4] ''मैं अपने गुरू पंडित देवव्रत चैधुरी जी का आभार व्यक्त करती हुं कि उन्होंने मेरे राग ज्ञान में नई रूह डाली और इसे विश्वस्त बनाया। इसे अपनी परंपरा से जोडना सिखाया। जब मैं गुरू जी के पास दिल्ली में सितार सीखने जाती थी तो उसी समय

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

आकाशवाणी में मैनें एक कार्यक्रम दिया था। एक दिन मैं पंडित जी के यहां खाली समय में इसकी रिकार्डिंग सुन रही थी। सुनकर गुरु जी कहने लगे कि 'मेरी यह रिकार्डिंग तुम्हें कहाँ से मिली।' यह सुनकर मैं हैरान हुई और मैंने उनसे कहा कि 'गुरु' जी यह मेरी आकाशवाणी में दिए गए एक कार्यक्रम की रिकार्डिंग है। तब गुरु जी ने ध्यान से सुना और शाबासी दी। उनकी यह टिप्पणी मेरे लिए यह जानने के लिए काफी थी कि मेरे जीवन भर की मेहनत व संघर्ष सफल हो गये हैं।''[5]

यह संस्मरण इस बात का भी परिचायक है कि डॉ. चक्रवर्ती जी एक सफल व उत्कृष्ट कलाकार है, जिनके वादन में गुरु की वादन-विशिष्टताएँ स्पष्ट दिखाई देती है। इन विशिष्टताओं को आपने अपनी लगन, परिश्रम व संघर्षों द्वारा आत्मसात किया है।

* रागों का गहनं एवं सूक्षम ज्ञान

एक योग्य कलाकार के लिए राग ज्ञान की परिधि विशाल होनी चाहिए। कभी-कभी देखा जाता है कि कुछ कलाकार केवल कुछेक रागों की प्रस्तुति देते रहते हैं। ऐसी पुनरावृति श्रोताओं को आकर्षित नहीं करती। डॉ. इन्द्राणी प्रचलित और अप्रचलित सभी रागों की सूक्ष्म जानकारी रखती है। आपके राग ज्ञान का क्षेत्र अति विस्तृत है। यही कारण था कि आपके गुरू पंडित देवव्रत चैधुरी जी ने आपको अपनी शिष्य बनाया। ''मैंने उनकी कला प्रस्तुतियों में से राग जय-जयवंती, मधुवंती, तोड़ी, बिहाग, यमन, बागेश्री, वृदावनी सारंग, किरवानी इत्यादि रागों को सुना और मुझे लगा कि उनके पास रागों का अपेक्षित भण्डार है और वे नवीनता में भी आस्था रखती है।''[6] 'देवविभा' (स्वयं निर्मित) राग का वादन आप अपने कई कार्यक्रमों में कर चुकी हैं। रागों को गहनता से समझने का ज्ञान आपको अपने गुरुवरों- पं. लालमणि मिश्र, डॉ. रामदास चक्रवर्ती तथा विशेष रूप से सेनिया घराने के मूर्धन्य कलाकार पंडित देवव्रत चैधुरी जी से मिला। एक कलाकार के रूप में डॉ. इन्द्राणी जी की योग्यता अतुलनीय है। रागों का उनका ज्ञान वास्तव में बेजोड़ है। राग के चेहरे को रागदारी कहा जाता है और उसकी जानकारी बहुत कम संगीतकारों को होती है। क्योंकि डॉ. इन्द्राणी ने सेनिया घराने की शिक्षा प्राप्त की है। अतः उन्हें पारंपरिक बंदिशों की समझ भी है जो उनके वादन में देखने को मिलती है।

* विविध लयकारियों के प्रयोग में दक्ष

उन्हें लय और ताल की गहरी समझ है जो उनके वादन प्रस्तुतीकरण में स्पष्ट दिखाई देती है। यही कारण है कि स्वरों को घुमा फिरा कर सम पर लाना, विभिन्न प्रकार की छंदयुक्त तिहाइयों-तोड़ों का निर्माण एवं उपज कर उन्हें ताल में निश्चित कर स्वर विस्तार करना, विलंबित के साथ-साथ द्रुत एवं अति द्रुत गति में वादन करने में उनकी पकड़ है। लय और ताल के विषय में उन्होंने कड़ी एवं साधना की है। तान-तोड़ों में अत्यधिक कठिन तथा लयकारी युक्त कलात्मक तिहाइयों का प्रयोग आपकी प्रतिभा का सूचक है और द्रुत तथा अति द्रुत लय की तान-तोडों का वादन आपके कठिन अभ्यास का प्रतिफलन है। आपने विविध लयकारियों में पारंगता अर्जित की है और क्लिष्ट लय व छंदों में वादन करने का मुख्य श्रेय आप अपने गुरु डॉ. रामदास चक्रवर्ती (बनारस) जी को देती हैं। ''बनारस रहकर डॉ. रामदास चक्रवर्ती जी ने ही मुझे विविध छंदों का तकनीक पक्ष सिखाया और तब मुझे पता चला कि छंदों पर काम कितने सुंदर ढंग से किया जा सकता है। मैनें उन्हीं से डेढ़ गुणा, तीन गुणा, पांच गुणा, सात गुणा इत्यादि लय में सितार वादन विस्तार का ढंग सीख लिया था।''[7]

* आलाप का भावपूर्ण विस्तार

आलाप राग की आत्मा है तथा राग के स्वरूप को विकसित करने का आधार भी। सितार वादन में बन्दिश से पहले आलाप जोड़ की गंभीरता के दर्शन होते है। राग रूपी भवन को आलाप बन्दिश तान आदि से सजाया व संवारा जाता है।''[8] आलाप राग की नींव को सुदृढ़ता प्रदान करता है। डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती का आलाप प्रस्तुतीकरण बहुत सहज, गंभीर और स्थिर है। कण और मींड का भावयुक्त प्रयोग, मर्मस्पशिता, सुरीलापन, कर्णप्रियता व भावपूर्ण लगाव इनके आलाप विस्तार के विशेष गुण हैं, आलाप की गंभीरता और स्वर का सही लगाव इन्द्राणी जी द्वारा सितार की बंदिशों के वादन की खासियत है, जो उन्हें अपने गुरूओं से प्राप्त हुई हैं। सेनिया घराना की पारंपरिक ध्रुपद शैली को आत्मसात करते हुए डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती सर्वप्रथम राग के स्थायी भाग में षड्ज को स्थापित कर मन्द्र सप्तक के स्वरों का भावपूर्ण विस्तार करती है। द्वितीय चरण (अंतरा) में मध्य सप्तक, तृतीय चरण (संचारी) में मंद्र व मध्य सप्तक के स्वरों के साथ संवाद करती

तथा अंतिम चरण (आभोग) में समस्त सप्तक के स्वरों से संवाद करती हुई वापिस लौटने की प्रक्रिया में तीन बार मोहरा' बजाकर आलाप प्रक्रिया का सफलतापूर्वक निर्वाहन करती है। आपके आलाप विस्तार में कहीं भी चंचलता नहीं हैं। ठहराव, चैनदारी तथा गंभीरता यह सब आपके आलाप प्रस्तुतीकरण में विद्यामान हैं। ''मुझे गत प्रस्तुतीकरण से भी बढ़कर आलाप में ज़्यादा आनंद आता है। आलाप की बढ़त करते-करते मैं इतनी मगन हो जाती थी कि समय का ख्याल ही नहीं रहता था और एक-एक आलाप में कैसे घंटों निकल जाते थे, पता ही नहीं चलता था।''[9]

* प्रभावी बंदिश (गत) विस्तार

डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती का योग्य वादन बनारस व सेनिया घराने के गुरुओं द्वारा दी गई शिक्षा व शैली के प्रतिनिधत्व है। आपने अपने गुरुजनों से जो सीखा उसे बाख़ूबी अपनी वादन कला में समेट लिया। आपके द्वारा प्रस्तुत बंदिश, गत वादन एवं विस्तार में गायकी व तंत्रकारी दोनों अंगों का मधुर समन्वय रहता है। आपकी वादन पद्धति गुरूओं के वादन सिद्धांतों का सही अनुपालन करती है। डॉ. इन्द्राणी जी की गत वादन की विलक्षणता निम्न रूपों में दृष्टिगत होती हैः-

- आप विभिन्न मात्राओं से उठने वाली गतों का चयन कर वादन करती हैं।
- आप मसीतखानी गत वादन में परंपरागत मिज़राब के विशेष बोल दिर दा दिर दा रा दा दा रा का निर्वाह शुद्ध रूप में करती है।
- आप तीनताल के अतिरिक्त अन्य विभिन्न सम/विषम तालों जैसे झपताल, एकताल, रूपक ताल में भी गत वादन करने में कुशल है।
- द्रुत लय की गतों को स्पष्टता से वादन करने में आपको महारत हासिल है।
- परंपरागत गतों के साथ-साथ आप तकनीकी शुद्धता से स्वरचित बंदिशों का वादन भी बाखुबी करती है।
- आपके वादन में गायन व तंत्रकारी का समन्वित रूप देखने को मिलता है।
- मुर्की, गमक, मींड, कण जैसे सौन्दर्य उपकरणों का यथावत प्रयोग करती है जिससे गत वादन को भावपूर्ण विस्तार मिलता है।
- तान-तोड़ों की विविधता

"गत में सितार की सुंदर तकनीकों का प्रयोग, मुखड़े से पहले 2, 3, 4.....8 ऐसे बढ़ते क्रम में तानें/तोड़े बजाना, तबले के साथ सवाल-जवाब, लड़ंत-भिड़ंत इत्यादि बहुत सी चीज़ें हमने उन्हीं से सीखी थी।''[10]

* छंदयुक्त तान- तोडे तिहाईयों का कलात्मक प्रवाह

आपके गत वादन में लययुक्त वज़नदार दीर्घ पल्लों की तान, आलंकारिक तान विविध छंदयुक्त तान-तोड़ों का प्रयोग सकुशलता से करने में सक्षम है। उनकी तानों में मिज़राव के बोल और छोटे-छोटे छंदों की प्रमुखता रहती है। विविध छंदों पर आधारित तिहाईयों का सौन्दर्ययुक्त प्रयोग आपके वादन की विलक्षणताओं में से एक है।

* आकर्षक एवं चमत्कृत झाला वादन

झाला वादन एक कठिन व विलक्षण तकनीक है। आलाप-जोड़ के पश्चात् जोड़-झाला का वादन छंदों के आधार पर किया जाता है। गत वादन के पश्चात् एक सौन्द्रयात्मक एवं द्रुत झाला वादन किया जाता है जो श्रोताओं को अचम्भित/आकर्षित करता है। डॉ. इन्द्राणी छंदों एवं गणित के आधार पर झालों के नए प्रकारों का वादन करने में सक्षम है। झाले की गति में वृद्धि करने पर भी आप लय तथा ताल से विरक्त नहीं होती है। कठिन से कठिन राग में भी बहुत सुगमता से लय में झाला वादन करना, इस प्रक्रिया में कभी-कभी आवर्तन के बीच-बीच में ही तबला वादक के साथ सवाल-जवाब करना इत्यादि इनके ऐसे गुणधर्म हैं, जो इनके झाला वादन के सौंदर्य में अभिवृद्धि करते हैं। ''मैंने

उनके द्वारा बजाया राग 'बागेश्री' सुना। उसमें झाला-वादन अति आकर्षक, प्रभावी तथा अत्यंत चमत्कृत कर देने वाला था। परंम्परानुसार वे झाला-वादन में बीन अंग का विशेष प्रयोग करती हैं।''[11]

* गायकी एवं तंत्रकारी का सुमधुर सामंजस्य

पंडित देबू चैधुरी जी की वादन शिक्षा को शिरोधार्य करते हुए प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती की वादन शैली में गायकी एवं तंत्रकारी अंग का सुमधुर सामंजस्य दिखाई देता है। वे वादन के साथ-साथ गायन को भी पूर्ण महत्व देती रही हैं। मींड का प्रयोग वे बहुत सहजता से करती हैं।

* टकसाली बंदिशों का विपुल भंण्डार

प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती के पास टकसाली बंदिशों का विपुल भंण्डार है। उनकी नोटेशन काॅपी में पंडित देबू जी द्वारा लिखित घरानेदार परंपरा की बंदिशों की लंबी सूची मिलती है। आपने सितार की लुप्त हो रही बंदिशों के संग्रह व प्रदर्शन हेतु यूजीसी से मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट स्वीकार व अनुदान प्राप्त कर सफलतापूर्वक संपादन भी किया गया।

* श्रोतावर्ग की मानसिकता पर गहन पकड़

कलाकार जब मंच पर आसीन होता है तो वह सभी बैठे श्रोतावर्ग का केंद्र बिंदु बन जाता है। मंचपर उसकी तारतम्यता संगतकारों और श्रोताओं दोनों के साथ होती है। श्रोताओं के भौगोलिक, सामाजिक और मानसिक स्तर का ज्ञान इत्यादि को तुरंत समझ लेना और श्रोताओं को अपने साथ एक सूत्र में बांध कर रखना भी एक कला है। आप मंच पर आसीन होकर श्रोतावर्ग की पूर्ण पकड़ रखती हैं और तीक्षण बुद्धि से उनके साथ योग्य सांमजस्य बनाती है। श्रोताओं की इच्छा भी पूर्ण करती है।

* कला के प्रति पूर्ण समर्पण

प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती पूर्णरूपेण समर्पित सितार वादिका है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात प्रो. इन्द्राणी ने कला क्षेत्र में एक प्रेरक मुकाम अर्जित किया। कई तरह की कठिनाइयों, प्रतिकूल परिस्थितियों, कष्टों का सामना करती हुई आपने अपने परिश्रम, गुरू भक्ति एवं आस्था के माध्यम से घरानेदार तकनीक सीखी और परंपरागत वादन प्रस्तुतियां भी दी है। रियाज़ के प्रति आप बेहद सजग है। प्रशासनिक पदों पर रहते हुए अत्यधिक व्यस्तताओं के बावजूद भी आपका रियाज़ विशेष प्रभावित नहीं हुआ। ''मैं अपना समय निकालकर प्रायः 2 से 4 घंटे नियमित रूप से अभ्यास करती रहीं। कभी कभार किन्हीं विशेष परिस्थितियों में ही रियाज़ की नियमबद्धता भंग हुई होगी। रियाज़ को मैं बेहद प्राथमिकता देती हुं।''[12] प्रो. मांडवी सिंह ने बताया कि "उनके साथ ऐसा नहीं है कि व्यस्तताओं के चलते सितार कमरे में रखा है और अभ्यास नहीं किया। वह लगातार अभ्यास करती रही है और परफॉर्म भी करती रही है। सन् 1998 से सन् 2000 के बीच बाहर भी प्रोग्राम करने के लिए गई है। खैरागढ़ में भी जब समय मिलता था तो अपना कार्यक्रम देती थी। कलाकारों को भी आमंत्रित करती रही हैं। इससे समझ में आता है कि वह संगीत को अपने जीवन में कैसे लेती रही हैं। यही संगीत में उनकी आत्मा का दृष्टांत है।''[13] एक सितार साधक के लिए रियाज़ का जितना महत्व होता है, उतना अन्य किसी का नहीं। डॉ. इन्द्राणी जी भी अपनी इस साधना को बहुत अधिक समर्पित हैं। "मैडम ने सेनिया घराने की शिक्षा प्राप्त की है, उनमें गंधार और निषाद के दो पर्दे नहीं होते, लेकिन इसके बावजूद विभिन्न रागों में लगने वाले दोनों गांधार और निषाद को इन्होंने कुशलतापूर्वक बजाया है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह कितनी कुशल व निपुंण कलाकार हैं।''[14]

* गुरूओं के प्रति अत्यंत सम्मान भावना एवं समर्पण

''संगीत की गहराई में गोता लगाने का सुअवसर सैद्धांतिक परिपेक्ष्य में हो अथवा कला पक्ष में। मैं अपने त्रिमूर्ति गुरुओं के मार्गदर्शन, स्नेहमय सुझाव, विषय की गहराई में डुबकी लगाकर मोती चुनने की प्रेरणा व शिक्षा आजीवन अपने स्मृति पटल पर संजोये रखूंगी। यह मेरे गुरूओं के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि मैं संगीत पर स्वाध्याय, मनन, निदियासन कर दुरूह विषयों पर चर्चा कर सकती हूँ, लिख सकती हूँ, नयी-नयी बन्दिशें बना सकती हूँ। कला प्रस्तुतियां दे सकती हुं। मैं आज जो कुछ भी हूँ, सब उन्हीं का आशीर्वाद है। एक बार पंडित देबू चैधरी जी शिमला में मेरे बुलावे पर किसी कार्यशाला में आए थे उनकी प्रस्तुति रखी गई जब वे ग्रीन रूम में अपना वाद्य सुर कर

रहे थे तो मुझे देखकर कहने लगे कि तुम भी मेरे साथ प्रस्तुति देने वाली हो। यह सुनकर मैं हैरान हो गई और वह राग जो मैंने इनसे सीखा नहीं था किन्तु उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए एक दो आवर्तन बजाकर उनके साथ मंच प्रस्तुति देने चली गई। यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी।''[15]

* कलात्मक एवं भावात्मक दोनों पक्षों का अपेक्षित समन्वय

कलात्मक एवं भावात्मक दोनों में परस्पर तालमेल का होना अपेक्षित तत्व है। श्रोतागण की आत्मिक सौंदर्यानुभुति तभी होगी जब कलाकार की कला प्रस्तुति में भाव एवं कला पक्ष दोंनो में उचित तालमेल होगा। प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती इन दोनों के प्रति सजग है। राग प्रस्तुतीकरण के दौरान आप इस बात पर विशेष ध्यान देती है कि कलापक्ष, भावपक्ष पर कहीं हावी ना हो और दोनों का अपेक्षित संतुलन बना रहे। तान-तोड़ों का क्लिष्ट वादन करते हुए भी उन्होंने भाव और रस को निर्दिष्ट करने वाले आलाप की गंभीरता को सदैव स्थापित करने का प्रयास किया। ''1 अगस्त 1998 को आकाशवाणी भोपाल में मेरा श्रोताओं के सम्मुख ष्स्पअम छंजपवदंस च्तवहतंउष् प्रस्तुत हुआ, जिसमें मेरे द्वारा 'यमन' तथा 'खमाज' रागों का वादन प्रस्तुत किया गया था। कार्यक्रम सम्पूर्ण होने के पश्चात् जैसे ही मैं रिकार्डिंग कक्ष से बाहर निकली, एक व्यक्ति मेरे सामने आकर खड़े हो गये तथा मेरे वादन की प्रशंसा करते हुए भावविभोर होकर बोले, 'मैडम! 'मैंने ऐसा सितार वादन आज तक नहीं सुना। आपके वादन में इतनी, सरलता, सहजता व मधुरता है कि आप अपने वादन से किसी का भी मन मोह सकती है। मैं भोजन कर रहा था, तभी आपका रेडियो पर सितार वादन का कार्यक्रम सुना। आपका सितार वादन इतना मधुर था कि मैं आपसे मिलने को उत्सुक हो गया तथा अपना भोजन त्याग कर आपसे मिलने चला आया।' मैं यह छोटा सा भेट आपके 5 चरणों में रखना चाहता हुं। आप उन्हें स्वीकार कर लें।' कहकर वह 50-50 के नोट मना करने पर रखते चले गए। उनकी जिद्ध के कारण मुझे वो पैसे रखने पड़े जिसे मैंने बाद में शिरडी संस्थान में दान स्वरूप चढ़ा दिया।''[16]

डॉ. इन्द्राणी के वादन में जहां भावपक्ष की प्रबलता है वही कलापक्ष की चपलता भी है। कुछ लोग तो इनके मधुर वादन सुन रोगमुक्त हुए हैं और आपके चरण स्पर्श कर आपके प्रति अपनी सम्मान और प्रेम की भावना को प्रदर्शित करते रहे हैं। आपके विदेश प्रवास के दौरान कई कार्यक्रमों में भी अनेक श्रोताओं ने आपको बताया कि आपके वादन सुनने के बाद उनका तनाव और उच्च रक्तचाप काफी हद तक कम हुआ है।

* मंच प्रस्तुति समय मुद्रा दोषों के प्रति सजग

मंच प्रदर्शन के समय किसी भी प्रकार की हास्यास्पद मुद्राओं का प्रदर्शन दोषयुक्त है जो कलाकार की सफलता, विषय-ज्ञान और प्रदर्शन के स्तर को प्रभावित कर सकता है। डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती मंचीय मुद्रा दोषों के प्रति बेहद सजग व चेतन है। उपज के दौरान सम दिखाते समय सिर-पैर हिलाकर संकेत देना, जैसे मुद्रा दोषों के प्रति वे सजग रहीं और छात्रा को भी इन प्रति आगाह करती रहती हैं। द्रुत गत के अंत में झाला वादन की तीव्र गती के समय अपनी बैठक पर पर्याप्त नज़र रखना, धीरे से मुस्कुराना यह दर्शाता है कि वह मंच पर स्थिति के अनुकूल सितार वादन करती है। एक अनुभवी कलाकार होने के नाते उन्हें मंच की तकनीकों का भी पूर्ण ज्ञान है। मंचीय कलाकारों की बैठक, माइक, साउंड इत्यादि बातों का भी उन्हें पर्याप्त अनुभव है।

* संगतकारों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार

सधे हुए कलाकार वही होते हैं जो मंच प्रदर्शन के साथ अपने सहयोगी कलाकारों व संगतकारों से उचित तारतम्यता स्थापित करते हैं। उन्हें उपज का उचित सुअवसर देते हैं और श्रोताओं के सम्मुख उन्हें किसी प्रकार से छोटा दिखाने का प्रयास नहीं करते है। डॉ. इन्द्राणी का अपने तबला संगतकारों के साथ तालमेल बहुत अच्छा है। स्टेज पर प्रस्तुति देते समय न केवल संगतकारों को पर्याप्त सम्मान देती हैं अपितु गतवादन के प्रांरभ में, बीच के अंतरालों में तथा झाला वादन समय सवाल-जवाब करते हुए उन्हें स्वतंत्र प्रदर्शन का अवसर भी देती है। यही कारण है कि आपके साथ देश के उत्कृष्ट तबला वादकों ने बड़े प्रसन्नतापूर्वक संगत की है, इनमें प्रमुख रूप से श्री फैयाज़ खां (दिल्ली), जे. मसी (बनारस), आनंद गोपाल बन्दोपाध्याय (दिल्ली), गोविंद चक्रवर्ती (दिल्ली), प्रो. गिरीश चंद्र श्रीवास्तव (इलाहाबाद), श्री एस. साईं

राम, (पुट्टापर्थी), श्री निशीकांत बड़ोदेकर (पुट्टापर्थी), अजय अष्टपुत्रे (बड़ोदा), डॉ. राजीव शर्मा (पù विभूषण पं. किशन महाराज के प्रमुख शिष्य), श्री मनोज नागर (दिल्ली), श्री विनोद लेले, (बनारस), श्री मदन सिंह कौंडल (शिमला), श्री सुरेन्द्र भट्ट (कुरूक्षेत्र), श्री रवींद्र यवगल तथा श्री विश्वनाथ नाकोड़ा (बैंगलोर रेडियो), श्री ईश्वरलाल मिश्र, श्री छोटेलाल मिश्र (बनारस), श्री बदरीप्रसाद मिश्र (बनारस), श्री राम जी मिश्र (बनारस के अनोखेलाल मिश्र के बेटे), श्री सुरेश भट्ट (खैरागढ़), श्री मुकुद भाले (खैरागढ़), त्रिलोक सिंह (शिमला रेडियो), श्री मदन सिंह कौंडल, श्री रूपराम धिमान, कशमीरी लाल (शिमला) इत्यादि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। वे एक सहृदय प्रदर्शक है, जो संगतकारों को बराबरी का अधिकार देती है।

* विभिन्न वाद्यों का ज्ञान व वादन

डॉ. इन्द्राणी को विभिन्न प्रकार के वाद्यों की बनावट की सूक्षम जानकारी है। सितार वादन की 'ए ग्रेड' की कलाकार होने के साथ-साथ आप सुरबहार, श्रुति वीणा, किन्नरी वीणा तथा कई प्रकार के वाद्यों का ज्ञान रखती हैं। ''सुरबहार पर मेरा हाथ उस्ताद जी के पट्ट शिष्य श्री निताई बोस (दादा) ने रखवाया था। बाद में मैं अपने शौंक से थोडा़ बहुत बजाती रही हुं। निताई दादा ने अपना सुरबहार मुझे पुरस्कार रूप में दिया था। तबला स्व. श्री राम जी से आरंभ किया था किन्तु सितार बजाने की दोनों उंगलियों में दर्द होने के कारण आगे नहीं सीख पाई। इसके अतिरिक्त अन्य वाद्य जैसे हारमोनियम, दिलरूबा, इसराज, रूद्र वीणा, किन्नरी वीणा, बैंजो, जलतरंग, कैसियो इत्यादि थोडा बहुत बजा लेती हूँ।''[17]

आप मंच तकनीक की ज्ञाता तथा अनुभवी कलाकार है। यद्यपि आप एक पूर्णरूपेण व्यावसायिक कलाकार नहीं बन पाई, क्योंकि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के संगीत व चित्रकला विभाग की विभागाध्यक्षा तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की कुलपति रहते हुए, अकादमिक व प्रशासनिक कार्यक्रमों एवं शिक्षण कार्य में व्यस्त होने के कारण आप कला प्रदर्शनों के लिए बहुत अधिक समय नहीं जुटा पाई; किन्तु इसके बावजूद भी जहाँ तक सम्भव हो सका आपने भारत व विदेशों में अनेक मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा संगीत के उत्थान के लिए कार्य किए।

डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती का क्रियापक्ष: समालोचकों की दृष्टि में

1. इन्द्राणी दी मेरी बड़ी गुरू बहन है। उनसे मेरी पहली मुलाकात गुरु जी (पंडित देबू चैधुरी जी) के घर में ही हुई थी। तब वे कुरुक्षेत्र से बकायदा गुरू जी के यहां नियमित रूप से सीखने आती थी। वे सितार की Playing Techniques जानने व उनकी application, रागदारी का ढंग, कैसे परस्पर राग मिलते-जुलते हैं, कौन सी स्वरावली उनको अलग करती है, ये सब कुछ पूछने के लिए सदैव तत्पर रहती थी तथा उन्हें apply करने का भी प्रयास करती थी। वे बहुत सुलझी हुई performer है। रागदारी के दायरे में रहते हुए अपनी परंपरा को जीवित रख कर उसको बजाना कठिन कार्य है। उनके सितार वादन में यह बात भी देखने को हमेशा मिली है।[18]

2. 'I have been impressed with Dr. Indrani"s style of discussing the problems of music. She has always been keen to learn the nuances of music by her heart. I feel proud that she has learnt from prof. Debu choudhuri, my Gurubhai, as both of us had opportunity to learn from the great Maestro Ustad Mushtaq Ali Khan Saheb of Senia Gharana. Indrani also has been blessed by Ustadji and learnt some intricacies of sitar Techniques from him.'[19]

3. 'Dr. Indrani Chakravarty My Student, who has attained a great height in the domain of Indian Classical Music both as a musicologist as well as a performer. It is no wonder that she has been honoured by many societies, Universities in India and abroad for her contribution in the field.'[20]

4. सं◌ागीत डॉ. इन्द्राणी के लिए अध्यात्म है। वादन या रियाज़ उनके लिए ध्यान से कम नहीं। डॉ. इन्द्राणी जी ने अपना जीवन संगीत और अध्यात्म दोनों को समर्पित किया है। उनका समर्पण भाव इतना प्रगाढ़ है कि जब वह परफॉर्म करने बैठती है तो लगता है जैसे ध्यान कर रही हो।''[21] विदूषी सुमित्रा गुहा

5. 'Pandit Debuji & his disciple Dr. Chakravarty are champions of orthodox tradtion and have the capability to produce time-swar-continuum. Music soothes the minds of listeners and helps to achieve complete indentification with the musical notes. As the great English writer I.A. Richards writes The valuable state of mind in asthetic experiences are those wherein we attain perfect onganisation of our impulses or a state of nervous equipoise. This can be experienced in Dr. Chakravarty"s recitals, when she goes deep into her thoughts while playing sitar; the time-swar-continuum is felt by the listeners'[22]

6. "कला के प्रति उनका रुझान मुझे लगातार दिखता रहा है। कला के लिए उनका अभ्यास, साधना और सोच में गहराई थी, इसलिए वह खैरागढ़ में कुलपति के पद पर रहते हुए भी नियमित रूप से अभ्यास करती थी जो सामान्यतः बहुत कठिन है। उन्होंने अपने कलाकार रुप और कला के प्रति अपने लगाव को कभी कम नहीं होने दिया। बहुत कम व्यक्तियों में ऐसा देखने को मिलता है।''[23]

7. "प्रो. डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती बहुत ही सुयोग्य सितार वादिका हैं। वे पदमभूषण पं. देबू चैधुरी की वरिष्ठ शिष्या है उनकी वादन शैली में सेनिया घराना के विशिष्ट गुणों का प्रभाव है। जैसे आलाप, जोड़ की गंभीरता, सुन्दर विस्तार, राग की सही तकनीक व स्वर लगाव का ढंग इत्यादि उनका मंचीय व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावी है। उन्हें मेरा शत-श नमन।"[24]

8. 'I was not lucky enough to see her full fledged performances in a live session but I saw her performances on 'Youtube' especially in Raag Yaman in sai Kulwant hall. You could easily see her command over the raag and taal. After I got appointed as assist. Prof. in esteemed institution, I saw few of her Performances in our music college. It was astonishing to see her playing sitar with so much of ease.'[25]

निष्कर्ष

डॉ. इन्द्राणी जी निःसंदेह बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व है। उनका कलाकार रूप अत्यंत उत्कृष्ट व पूजनीय है। इन्होंने अपनी वादन शैली की परंपरा को शिरोधार्य कर उसका सफल निर्वाह कर हिंदुस्तान में ही नहीं, अन्य राष्ट्रों में भी सेनिया घराने का गौरव उन्नत व उज्ज्वल किया है। डॉ. इन्द्राणी के उत्तम सितार वादिका होने का प्रमाण स्वरों का स्पष्ट लगाव, राग की शुद्धता, बंदिश का सौंदर्य, विलक्षण तान/तिहाई की कल्पनाशील रचनाधर्मिता, लय और ताल पर अधिकार, श्रोताओं के मनोविज्ञान की समझ, संगतकारों के साथ तालमेल इत्यादि सभी गुणों से मिल जाता है। डॉ. इन्द्राणी का कला कौशल, मननशीलता, सृजनात्मकता से संबद्ध जीवन, संगीत के प्रति उनका निः स्वार्थ प्रेम व भक्ति इस बात के साक्षी हैं कि आप का संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित एक पवित्र अनुष्ठान हैं।

संदर्भ

1. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
2. वही
3. श्रीमती इंदु से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
4. डॉ. चित्रा शर्मा से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
5. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
6. प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना

7. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
8. चक्रवर्ती (डॉ.) इन्द्राणी, तन तंत्री मन किन्नरी, पृष्ठ संख्या 27
9. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
10. डॉ. चित्रा शर्मा से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
11. प्रो. सभय साची सारखेल से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
12. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
13. प्रो. (डॉ.) मांडवी सिंह से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
14. डॉ. चित्रा शर्मा से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
15. प्रो. (डॉ.) इन्द्राणी चक्रवर्ती से की गई साक्षातकार से प्राप्त सूचना
16. वही
17. वही
18. प्रो. अनुपम महाजन से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
19. श्री निताई बोस, अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ सं. 4.
20. डॉ. देबू चैधरी, अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ सं. 6.
21. विदूषी सुमित्रा गुहा से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
22. सोमदत्त भट्टू, अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ सं. 46.
23. प्रो. (डॉ.) मांडवी सिंह से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
24. प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर की डॉ. राजीव शर्मा से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
25. श्री निशीकांत बड़ोदेकर से की गई साक्षात्कार से प्राप्त सूचना